SHRI SUJEET KUMAR (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by hon. Member.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by hon. Member.

**Need to give Marathi language the status of a Classical language**

**डा. भागवत कराड़** (महाराष्ट्र): * "माननीय सभापति जी, आप ने मुझे मराठी में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ । मैं इस विषय में मराठी में बात करने वाला हूँ। देश के उपराष्ट्रपति के नाते आप ने 16 फरवरी, 2021 को सांसदों को एक पत्र लिखा। इसका कारण था 21 फरवरी को मनाया जाने वाला मातृभाषा दिवस। उस दिन के उपलक्ष्य में आप के द्वारा लिखे गए लेख देश की कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपने इसमें आग्रह किया है कि हम अपनी मातृभाषा को बढ़ावा दें, अपनी मातृभाषा का संवर्धन करें और रोजमर्रा की ज़िंदगी में मातृभाषा का अधिकतम प्रयोग करें। हमारी मातृभाषा विलुप्त न हो जाए, इसलिए हमे अपनी मातृभाषा में ज्यादा से ज्यादा बोलना चाहिए, ऐसा भी आग्रह आपने किया है । प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार प्रह्लाद केशव अत्रे ने कहा है, कि यह कहने में किसी को लज्जा नही आनी चाहिए कि मैंने अपनी माँ का दूध पिया है, इसी तरह अपनी भाषा में बोलने में भी किसी को लाज नही आनी चाहिए। छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजर्षि शाहू आंबेडकर जैसे अनेक महापुरुषों की मातृभाषा मराठी है। इसी प्रकार से संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत रामदास, संत जनाबाई आदि अनेक संतजनों ने मराठी भाषा का प्रबोधन करके, मराठी भाषा में ही अभंग रचना की है। संत नामदेव के अभंग तो सिख धर्म के 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी देखने को मिलते हैं। अपनी मातृभाषा और उससे जुड़ी संस्कृति का संवर्धन और प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता आज हर एक को है। हर साल 27 फरवरी अर्थात् कवि कुसुमाग्रज की जयंती को "मराठी राजभाषा दिवस" के रूप में मनाया जाता हैं। प्राचीन काल में मरहाटी, फिर मराठी, फिर महाराष्ट्र प्रकृति – जैसी यात्रा से गुज़रते हुए मराठी शब्द को आज मान्यता मिली हैं। मराठी का पहला ग्रंथ 'गाथा सप्तशती' हजारों साल पुराना है। उसके साथ ही लीळाचरित्र, संत ज्ञानेश्वर की लिखी हुई 'ज्ञानेश्वरी', जैसे मराठी ग्रंथ भी सैकड़ों साल पहले लिखे गए हैं। मैं आप के

* Hindi translation of the original speech delivered in Marathi.

माध्यम से केंद्र सरकार से विनती करता हूँ कि चूँकि मराठी भाषा, शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने के लिए जो भी शर्तें आवश्यक हैं, वे सब पूरी करती है, अतः मराठी को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी जाए। महाराष्ट्र सरकार ने इस काम के लिए रंगनाथ पठारे समिति नियुक्त की थी। उन्होंने इस संदर्भ मे 800 पृष्ठ का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है। इस प्रतिवेदन में भी मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने की सिफारिश की गई है। मै अपने भाषण का समापन दो काव्य – पंक्तियों से कर रहा हूँ :-

*"हम भाग्यशाली हैं जो मराठी बोलते हैं।*
*हम धन्य हैं जो मराठी को सुनते हैं।*
*धर्म, पंथ, जाति हम मराठी ही मानते हैं।*
*दुनिया में मराठी को मातृस्वरूप मानते हैं"।*

कवि सुरेश भट्ट की इस कविता से मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

**श्री सभापति**: *"ठीक है। अभिनंदन । आपने अच्छा बोला है"।

SHRI NARHARI AMIN (Gujarat): Sir, I associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

**श्री सैयद जफर इस्लाम** (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

**श्री हरनाथ सिंह यादव** (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA (Madhya Pradesh): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

SHRI SUBHASH CHANDRA SINGH (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

---

* Hindi translation of the original speech delivered in Marathi.

DR. FAUZIA KHAN (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Dr. Karad.

**श्री सभापति** : खरगे जी, मेरी मराठी ठीक है न? खरगे जी कन्नड़, मराठी, तेलुगू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, ये सब भाषाएं जानते हैं। श्री मल्लिकार्जुन खरगे।

**Situation arising out of ongoing strike by bank employees**

**विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे)** : चेयरमैन साहब, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे आज ज़ीरो ऑवर में बोलने का मौका दिया। महोदय, खासकर 9 बैंकों की यूनियन से जुड़े हुए लाखों कर्मचारी दो दिनों से हड़ताल पर हैं, जिसके कारण बैंकों के कामकाज ठप हो गए हैं। आज आम जनता और कारोबारी लोग बहुत परेशान हैं। जो बैंक हड़ताल पर हैं, उन बैंकों के कर्मचारी 15 और 16 मार्च को तथा उसके बाद 17 मार्च को जनरल इन्श्योरेंस कम्पनियों के कर्मचारी हड़ताल पर जा रहे हैं। फिर 18 मार्च को एलआईसी कर्मचारी निजीकरण के खिलाफ हड़ताल पर होंगे। देश में लगभग 12 राष्ट्रीयकृत बैंक्स हैं, जिनकी देश में लगभग एक लाख शाखाएं हैं और इन बैंकों में लगभग 13 लाख लोग काम करते हैं और इनमें 75 करोड़ से ज्यादा खातेदार हैं। खातेदार भी बैंक का स्टेकहोल्डर होता है और सरकार इन 75 करोड़ स्टेकहोल्डर्स से पूछे बिना ही इन बैंकों का निजीकरण करने का फैसला ले रही है। सरकार की गलत नीतियों से और अंधाधुंध निजीकरण और बेमकसद मर्जर के कारण कर्मचारी भविष्य के प्रति बहुत चिंतित हैं। इन 13 लाख कर्मचारियों का कोविड-19 जैसे खतरनाक दौर में रोजी-रोटी का सवाल है और खासकर जो इन बैंक्स में काम करने वाले लोग हैं, जो गरीब तबके के लोग रिज़र्वेशन में आते हैं, उन्हें अगर कहीं एश्योर्ड जॉब मिलती है तो ऐसे नेशनलाइज़्ड बैंक्स में और पब्लिक सेक्टर्स में ही मिलती है। इंदिरा जी ने बहुत सोच-विचार...

MR. CHAIRMAN: Please look at the time.

SHRI MALIKARJUN KHARGE: Give me one minute, Sir. I am specially requesting you.

MR. CHAIRMAN: As you know, in thirty seconds, the mike will be off.